पोरयां तां सभ ईंदा, सभ सची चोंदा से।
जे असां बेठे अचे दुनियां, जे कीं डिसूं रांद ए।। ३८ ।।

पीछे तो सभी आएंगे और सच्ची बातें करेंगे, परन्तु हमारे यहां खेल में बैठे यह दुनियां वाले आ जाएं, तो हम भी कुछ खेल की लज्जत ले लें।

हितरो त आइम तेहेकीक, पोए मूं गाल सची सभ चोंदा।
असां हल्ले पोरयां, हथडा घणूं गोहोंदा।। ३९ ।।

यह बात तो निश्चित है कि मेरे पीछे मेरी बातों को सभी सत्य बोलेंगे। हमारे जाने के बाद हाथ मलते रहेंगे।

पण असल पांहिजी गिरोमें, जा रूहअल्ला चई।
सकुमार बाई गडवी, अजां सा पण न्हार सई।। ४० ।।

परन्तु हम रूहों की जमात में जैसा श्री श्यामाजी ने कहा था, उसी अनुसार शाकुमारबाई मिलीं, पर अभी तक वह साथ में आई नहीं हैं।

न तां कम सभ पूरो केयो, अने करिए पण थो।
कंने पण तेहेकीक, से पूरो आंझो आए तो।। ४१ ।।

वरना सब काम पूरे किए और आप करते भी हैं। यह भी निश्चित है कि आगे भी करोगे। ऐसा पूरा भरोसा आप पर है।

महामत चोए मूं वलहा, तोसे करियां लाड कोड।
केयम गुस्तांगी रांदमें, जे तो बंधाई होड।। ४२ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं, हे मेरे प्यारे श्री राजजी महाराज! मैं आपसे बहुत प्यार करती हूं। खेल में जो गुस्ताखी की है, वह भी जब आपने हुज्जत बंधाई।

।। प्रकरण ।। ८ ।। चौपाई ।। ३८३ ।।

मारकंडजो दृष्टांत

चई सुंदरबाई असां के, मारकंड जी हकीकत।
ईं दर थी आंके खोलियां, आंजी पण ईं बीतक।। १ ।।

सुन्दरबाई (श्री श्यामाजी) ने हमको मारकण्ड की हकीकत बताई थी और कहा था कि तुम्हारी भी कुछ ऐसी कहानी है।

निमूनो मारकंड जो, चयो सुन्दरबाई भली भत।
सुकदेव आंदो आं कारण, हे जे पसो था हित।। २ ।।

मारकण्ड का नमूना सुन्दरबाई श्री श्यामाजी ने अच्छी तरह समझाया। शुकदेव मुनि ने भी तुम्हारे वास्ते कहा जो आप यहां देख रहे हैं।

जे कीं गुजरयो मारकंड के, विच जिमी हिन अभ।
से गुझ दिलजो निद्रमें, डिठो नारायणजी सभ।। ३ ।।

आसमान जमीन के बीच मारकण्ड ऋषि के ऊपर जैसी बीती, उसके दिल की छिपी बातों का पता नारायणजी को था।

Nijanand App

डेखारी नारायण जी, माया मारकंड के।
जे कीं डिठो रिखि निद्रमें, सभ चई नारायणजी से।।४।।

नारायणजी ने मारकण्ड ऋषि को माया दिखलाई। जो कुछ ऋषि ने बेसुधि में देखा, वह बातें नारायणजी ने उसको बताईं।

असी पण बेठा आं अगियां, निद्रडी डिंनी आं असां।
हे जा डिसो था निद्रमें, से कुरो खबर न्हाए आं।।५।।

हम रूहें भी आपके आगे बैठी हैं और ऊपर से फरामोशी का परदा दे दिया है। अब जो हालत नींद में हमारी हो रही है, क्या उसकी खबर आपको नहीं है?

धणी बेठा आयो विचमें, सभ नजरमें पाए।
असां दिलजी को न करयो, आंजे दिलमें तां आए।।६।।

धनी! आप हम सबको नजर में लेकर बीच में बैठे हैं। हमारे दिल की बातें आप पूरी क्यों नहीं करते? आपके दिल में चाहना तो है।

असां दिलज्यूं गालियूं, से कुरो आं डिठ्यूं न्हाए।
से कीं आईं सहोथा, जे विलखण थिए असांए।।७।।

हमारे दिल की बातें क्या आपको मालूम नहीं हैं। यदि हां, तो आप सहन कैसे करते हो और हमें क्यों रुलाते हो?

आंई बेठा सुणो गालियूं, असां के को विधें दिल ल्हाए।
को न करिए मूं दिलजी, आंजे दिलमें केही आए।।८।।

आप बैठे-बैठे बातें सुनते हो। आपने हमको इस तरह से दिल से क्यों उतार दिया अब मेरे दिल की बातें क्यों नहीं करते? आपके दिल में क्या है?

मारकंड माया मंझां, जडे किएं न निकरी सगे।
तडे गिडाई रिखि के पांणमें, मंझ पेही मारकंड जे।।९।।

मारकण्ड ऋषि माया में से जब किसी तरह नहीं निकल सका तो नारायणजी ने माया में प्रवेश कर मारकण्ड को अपने में मिला लिया।

असां जा डिठी रांदडी, आंईं पसी तेहजो सूल।
मूंके असां के फुरमान, हथ पांहिजे नूरी रसूल।।१०।।

हमने जो इस खेल को देखा है, उसके दुःखों को आप जानते हैं, इसलिए आपने कुरान को भेजा और रसूल को हमारे वास्ते भेजा।

लखे भते लिखियां, कई इसारतें रमूजें।
सभ हकीकत मूकियां, भाइए मान किएं समझें।।११।।

आपने लाखों तरह से कई इशारतों और रम्जों (रमूजों) जो शास्त्रों में लिखीं, सब तरह की हकीकत भेजी। यह समझ कर कि इसी तरह से इन मानवती रूहों को जानकारी मिल जाए।

Nijanand App

पोए मूकियां रूह पांहिजी, जा असांजी सिरदार।
कुंजी आंणे अर्स जी, खोल्याई बका द्वार।। १२ ।।

उसके बाद आपने अपनी बड़ी रूह श्री श्यामाजी जो हमारे सिरदार हैं, भेजा। जिन्होंने तारतम ज्ञान की कुंजी लाकर परमधाम के दरवाजे खोले।

जे निसान्यूं फुरमानमें, से डिंनाई सभ निसान।
सुन्दरबाई कई भतें, करे डिनाऊं पेहेचान।। १३ ।।

कुरान में जो निशान लिखे हैं, उन सब निशानों की पहचान कराई। इस तरह से सुन्दरबाई (श्री श्यामाजी) ने हमको कई तरह से पहचान करा दी है।

ईं चुआं आंऊं केतरो, अलेखे आईन।
बिंनी कौल मिडी करे, डिंनाऊं दृढ़ आकीन।। १४ ।।

इस तरह से अब कहां तक कहूं, बेसुमार बातें हैं। वेद-कतेब दोनों की भविष्यवाणी मिलाकर हमको यकीन दिलवाया।

दिलडा असां जा जागया, पण पुजे ना रूहसी।
से हुकम हथ आंहिजे, हल्ले न असां जो कीं।।१५।।

हमारा दिल तो जाग गया, पर रूह तक ज्ञान नहीं पहुंचा, क्योंकि यह सब आपके हुकम के हाथ में है। हमारा यहां कुछ नहीं चलता।

मारकंड जे दिलजी, सभ नारायण जी चई।
जडे याद डिंनी मारकंड के, तडे हिक दम निद्र न रई।। १६ ।।

मारकण्ड के दिल की सभी बातें जब नारायणजी ने कहीं, जब मारकण्ड को याद दिलाया, तब एक क्षण में उसकी नींद समाप्त हो गई।

उडी वेई मारकंड के, निद्रडी कंदे विचार।
तोहे सुध असां न थिए, जे डिंनाऊं उपटे द्वार।। १७ ।।

विचार करते ही मारकण्ड की नींद उड़ गई, परन्तु हम कभी विचार नहीं करते कि आपने हमारे लिए परमधाम के दरवाजे तक खोल दिए हैं।

तो डिसंदे आंऊ विलखां, सभ सुध डिंनी आं हित।
वलहा याद अजां को न अचे, को डिंना हियडो सखत।। १८ ।।

आपने यह सब खबर मुझे दी। आप देख रहें हैं मैं तड़प रही हूं। मेरा दिल पत्थर जैसा कर दिया है कि धनी की याद नहीं आती।

धणी मूंहजे धामजा, अंईं चओ करियां तीं।
असां के हिन रांदमें, मुझाए रख्या कीं।। १९ ।।

हे मेरे धाम के धनी! अब आप जैसा कहो मैं वैसा करूं। हमको आपने इस खेल में क्यों उलझा रखा है?

Nijanand App

गाल मिठी वलहा, सुणाए डेखार धाम।
दीदार डेयम पांहिजो, मूं अंगडे थिए आराम।। २० ।।

हे मेरे प्रीतम! अब मीठी बातें सुनाओ और परमधाम दिखाओ। अपना दर्शन दो जिससे मेरे तन को शान्ति मिले।

आंऊं चुआं बे केहके, तूं मूंजो धणी आइए।
तूं सुणी ईं को करिए, ईं वार वार को चाइए।। २१ ।।

मैं दूसरे किससे कहूं? मेरे धनी तो आप हैं। आप सुन करके भी ऐसा क्यों करते हो? बार-बार क्यों कहलवाते हो?

सुंदरबाईएं जे चयो, मूं दिल पण डिंनी गुहाए।
सभ गाल्यूं असां जे दिलज्यूं, धणी तो खबर सभ आए।। २२ ।।

सुन्दरबाई ने जो कुछ कहा मेरे दिल ने भी उसकी साक्षी दी। हमारे दिल की सब बातों की आपको सब खबर है।

हे गाल्यूं आंईं डिसी करे, कीं मांठ करे रहो।
अर्स संग सारे करे, आंईं विछोहा कीं सहो।। २३ ।।

यह सब बातें देखकर भी आप चुप क्यों हो? परमधाम का सम्बन्ध जानकर भी आप वियोग सहन क्यों करते हो?

अर्स असांके विसर्‍यो, अने विसर्‍या तो कदम।
पण तो को संग विसारियो, कीं विसारियां खसम।। २४ ।।

हमको तो परमधाम भूल गया और आपके चरण भी भूल गए, परन्तु आपने हमारे सम्बन्ध को कैसे भुला दिया? आप कैसे भूल गए?

दिलडो अर्स संग जो, असां मथां कीं लाथां।
पुकारींदे न न्हारियो, असां विच हेडी को पातां।। २५ ।।

हमारा आपका परमधाम का रूह का सम्बन्ध है। आपने हमें दिल से कैसे उतार दिया? मैं इतनी पुकार करती हूं, फिर भी आप हमारी तरफ नहीं देखते। हमारे बीच में ऐसा क्या हो गया?

किते वेयूं हो गाल्यूं, जे अर्स विच केयूं।
तांजे असीं विसरया, आंके विसरी कीं वेयूं।। २६ ।।

परमधाम में जो हमने वायदे किए थे, वह सब कहां गए? कदाचित हम भूल भी गए, तो आप कैसे भूल गए?

करियां गुस्तांगी वडियूं, पण हियडो चायो तोहिजो चए।
जे मूं जगाए सामों न्हारियो, त मूं रूहडी कीं रहे।। २७ ।।

मैं बड़ी भारी गुस्ताखी करती हूं, परन्तु जो कुछ दिल से कहती हूं, आपके कहलाने से ही कहती हूं। यदि मुझे जगाकर मेरी तरफ देखो, तो मेरी रूह कैसे रह सकती है?

Nijanand App

चरई थी चुआं थी, जिन डुखे जो मूंहसे।
तो डिखारयो हिक तोहके, आंऊं चुआं बे केहके।। २८ ।।

मैं दीवानी होकर (बांवरी, पागल) कह रही हूं कि आप मुझे दुःखी न करें, क्योंकि आपने मुझे केवल आपको दिखाया है। मैं दूसरा किससे कहूं?

चंगी भली आइयां, चरई ते चुआं।
भुले चुके वैण निकरे, जिन डुखे जो मुआं।। २९ ।।

मैं अच्छी भली हूं और पागलों जैसी बातें करती हूं। यदि भूल-चूक में कोई वचन निकल जाए, तो आप दुःखी न होना।

ईं करे विहारयां, हितरी पण न सहां।
त कीं घुरंदिस लाडडा, कीं पारीने असां।। ३० ।।

आपने ऐसा करके हमें बिठा रखा है, फिर भी हमारी इतनी सी बात सहन नहीं करते? तो फिर मैं कैसे आपसे प्यार मांगूंगी? आप हमें प्यार कैसे देंगे?

बिआ लाड मूं विसरया, पसी तोहिजो हाल।
न कीं डिए दीदार, न कीं सुणाइए गाल।। ३१ ।।

आपकी यह हालत देखकर मेरी सब चाहना भूल गई है। आप न तो दर्शन देते हो और न बातें करते हो।

तोके आंऊं न पसां, न की कंने सुणयां।
हितरो पण न थेयम, त बिआ केरा लाड मंगां।। ३२ ।।

आपको न मैं देख पाती हूं और न ही आपकी बातें सुन पाती हूं। जब आपसे इतना ही नहीं होता तो दूसरी कौन-सी मांग आपसे करें?

मंगा जाणी संगडो, जे तो देखारयो।
हांणे विच बेही सभ जगाइए, हांणे कारयूं को कारयो।। ३३ ।।

अपना मूल का सम्बन्ध जानकर ही मैं मांगती हूं। आप परमधाम में बैठकर सबको जगाओ। शोर क्यों मचवाते हो?

मंगा थी पण द्रजंदी, मूं मथां हेडी थेई।
हे सगाई निसबत, आंके विसरी कीं वेई।। ३४ ।।

मांगती भी हूं और डरती भी हूं, क्योंकि मेरे ऊपर ऐसी बीती है। इस सम्बन्ध को आपने कैसे भुला दिया?

मूंके निद्रडी विसारियो, पण तूं कीं विसारिए।
तो दिल से को उतारियूं, ही वार वार को चाइए।। ३५ ।।

मुझे तो फरामोशी ने भुला दिया, पर आप क्यों भूल गए और आपने अपने दिल से क्यों उतार दिया? ऐसा बार-बार क्यों कहलवाते हो?

Nijanand App

हेडी घुंडी दिलमें, कीं पाए बेठो पांण।
आंऊं कडीं न रहां दम तो रे, हेडी को करे मूं से हांण।। ३६ ।।

आप दिल में ऐसी गांठ लगाकर क्यों बैठ गए? मैं तो कभी भी आपके बिना एक पल भी नहीं रह सकती। आप मुझ से ऐसा क्यों करते हैं?

मूं मथां हेडी को केइए, केहेडो आइम डो।
जे गाल होए आं दिलमें, से मूं मांधां को न कढो।। ३७ ।।

मेरे ऊपर ऐसा क्यों करते हो? मेरा क्या कसूर है? जो बात आपके दिल में है, उसे मेरे सामने क्यों नहीं कह देते?

अगे सुन्दरबाई हल्लई, रोंदी कर–करंदी।
हांणे मूंसे ईं को कर्‍यो, करे हेडी मेहेरबानगी।। ३८ ।।

आगे सुन्दरबाई रोती-कलपती चली गई। मेरे ऊपर मेहरबानी करो? मुझसे ऐसा क्यों करते हो?

मांधां डिखारई रांद रातमें, हांणे जाहेर केयां फजर।
हे गालियूं केयूं सभ मेहेरज्यूं, सा लाथाऊं कीं नजर।। ३९ ।।

पहले तो खेल रात्रि में दिखलाया। अब तो ज्ञान का सवेरा हो गया है। यह सब बातें आपकी मेहर के कारण हैं। आपने मुझे नजर से दूर क्यों कर दिया?

हांणे जीं जांणे तीं मूं कर, पण बदल मूंहजो हाल।
तीं कर जीं पसां तोहके, जीं सुणियां मिठडी गाल।। ४० ।।

अब जैसा जानो वैसा मुझ से करो, परन्तु मेरी हालत बदल दो। ऐसा करो जिससे मैं आपको देख सकूं और आपकी मीठी बातें सुन सकूं।

केडा वंजा के के चुआं, बिओ को न डिखारे हंद।
तूं बेठो मूं भर में, आंऊं केडा वंजा करे पंध।। ४१ ।।

अब कहां जाऊं? किससे कहूं? दूसरा कोई ठिकाना हीं नहीं है। आप मेरे पास ही बैठे हैं तो रास्ता चलकर कहां जाऊं?

बट बेठा न सुणो, न कीं न्हारयो नेणन।
न पुजी सगां पांध के, न कीं सुणियां कनन।। ४२ ।।

आप पास में बैठे हो फिर भी न तो हमारी बातें सुनते हो और न ही हमारी तरफ देखते हो। न ही आपका पल्ला पकड़ सकती हूं और न कुछ कानों से सुनाई देता है।

मूंजा पुजे न हथ अंगडा, त रहां कींय करे।
कोठाइए कागर मूंकी करे, कीं बेहां धीरज धरे।। ४३ ।।

मेरा हाथ भी आपके अंग तक नहीं पहुंचता, तो आपके बिना कैसे रह सकती हूं? अब आप मुझे चिट्ठी लिखकर बुलवाते हो तो मैं धीरज धर (धैर्य धारण) कर कैसे बैठूं?

Nijanand App

पेरो पांणे जांणी हिन के, हांणे करिए हल्लणजी वेर।
पुकारींदे न डेओ, पसण पांहिजा पेर।। ४४ ।।

आपने पहले ही अपनी पहचान दे दी और अब चलने का समय बताते हैं। मेरे बार-बार पुकार करने पर भी अपने चरणों को देखने नहीं देते।

गाल निपट आए थोरडी, हेडी भारी को केइए।
सभनी गाले समरथ, पण दिल घुंडी केई रखिए।। ४५ ।।

यह बात बहुत छोटी सी है। आपने इसे इतना भारी क्यों बना रखा है? आप सब तरह से समर्थ हैं। तब दिल में गांठ क्यों लगा रखी है?

आंईं डुखोजा दिलमें, जडे चुआं घुंडी जो वैण।
पण कीं करियां कीं चुआं, मूं अडां न्हारयो न खणी नैण।। ४६ ।।

जब मैं कहती हूं कि आपने दिल में गांठ लगा रखी है, तो आपको दुःख होगा? पर मैं क्या करूं? किससे कहूं? जब तक आप मेरी तरफ नैनों से देखते नहीं।

जा पर चओ सा करियां, तूं पांण कराइए थो।
हे पण तूंही चाइए, मूं मथे कीं अचे डो।। ४७ ।।

जैसा आप कहो, वैसा मैं करूं। आप स्वयं ही कराते हैं। यह बात भी आप ही कहला रहे हैं। तो फिर मेरे पर दोष कैसे आता है?

हेडी रांद डिखारई, मय वर कोडी लख हजार।
कीं करियां कीं चुआं, मूंजा धणी कायम भरतार।। ४८ ।।

यह खेल जो आपने दिखाया है, इसमें लाखों करोड़ों उलझनें हैं। मैं क्या करूं? किससे कहूं? आप ही मेरे सामर्थ्य अखण्ड धनी हैं।

जे अपार वराका तोहिजा, मूं हिकडी गंठ न छुटे।
लखे भते न्हारियां, तो रे जोडी कां न जुडे।। ४९ ।।

यह सब आपकी बेशुमार झंझटें हैं, जिसकी एक गांठ भी मेरे से नहीं छूटती। मैंने लाखों तरह से देखा। आपके बिना बनाये कोई बात नहीं बनती।

जे वराका लाहिए, त आंऊं बेठिस तरे कदम।
को न वराको कितईं, ई आइम मूंजा खसम।। ५० ।।

अब इन उलझनों को हटाओ। मैं आपके चरणों के तले बैठी हूं और आप मेरे पति हैं, इसलिए कोई झंझट कहीं नहीं है।

चुआं रुआं के न्हारियां, बेठो आइए मूं बट।
लाहिए दममें तूंहीं धणी, अंखे कंने जा पट।। ५१ ।।

मैं कहती हूं, रोती हूं, देखती हूं कि आप मेरे पास बैठे हैं। मेरे आंखों-कानों में जो परदे पड़े हैं, उनको आप एक पल में हटा सकते हैं।

Nijanand App

सौ वराके हिकडी, गाल ईं आइए।
मूंजो हल्ले न तिर जेतरो, हे पण चुआं थीं तोहिजे चाइए।।५२ ।।

सौ बात की एक बात यहां अब हो गई कि खेल में मेरा जरा भी नहीं चलता। यह भी मैं जो कहती हूं, आपके कहलाने से कहती हूं।

तूं बंधे तूं छुडाइए, तित बी काएं न गाल।
जीं फिराइए तीं फिरे, कौल फैल जे हाल।।५३ ।।

आप ही बांधते हैं, आप ही छुड़ाते हैं। दूसरे किसी की बात ही नहीं है। अब आप जैसा घुमाएं वैसा ही हमारी कहनी, करनी और रहनी घूम जाए।

हांणे मोंह थीं मंगां मूं धणी, मूंजा सुणज सभ स्वाल।
महामत चोए मूं लाडडा, धणी पार तूं नूरजमाल।।५४ ।।

महामतिजी कहते हैं कि हे मेरे धनी! मेरी प्रार्थना सुनिए। मैं अपने मुंह से मांगती हूं कि मेरे लाड़-प्यार को आप पूर्ण करें।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ४३७ ।।

आसिकजा गुनाह

सुणो रूहें अर्स जी, जा पांणमें वीती आए।
जेहेडी लटी पांण केई, एहेडी करे न बी कांए।।१ ।।

श्री महामति जी कहते हैं, हे मेरे धाम की रूहो! सुनो, जो हम पर बीती है, हमने जैसा उलटा काम किया है, ऐसा उलटा कोई नहीं करता।

चुआं तेहजो बेवरो, सुणजा कन डेई।
डिठम से सहूर से, सहूर आंईं पण करेजा सेई।।२ ।।

मैं उसका विवरण बताती हूं। ध्यान देकर सुनना। फिर तुम भी उसे ध्यान से देखना, जैसे मैंने देखा है।

पोए जा दिल अचे पांहिजे, पांण करियूं सेई।
भुली रोए तेहेकीक, हथड़ा मथे डेई।।३ ।।

पीछे आपके दिल में जो आएगा वह करेंगे। जो गल्ती करती है उसे ही सिर पर हाथ मार कर रोना पड़ता है।

ते लाएं कीं भूल जे, आए हथ अवसर।
पोए को पछताए जे, पेरो हल्लजे न न्हारे नजर।।४ ।।

इसलिए हाथ में आए समय को क्यों भूलें? पहले से ही नजर खोलकर चलें, ताकि पीछे पछताना न पड़े।

गिरो पांहिजी आसिक, चांऊं मंझ हिंनी।
जा पर पसां पांहिजी, त असां हे अकल के डिंनी।।५ ।।

यहां माया के संसार में अपनी जमात आशिक कहलाती है। फिर जब मैं अपनी तरफ देखती हूं तो सोचती हूं कि हमको यह अक्ल किसने दी?

Nijanand App